जम्बूद्वीप

(जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश भाग ३ से आधारित)

दृष्टि भेद – (1) पर्वत व कूट नाम में
(2) कांचन शैल की संख्या में
(3) 4 शिलाएं जो सुमेरु पर्वत पर है उनमें दिशा भेद है।
(4) कुमानुष द्वीप के अन्तराल व विस्तार में (जो लवण सागर में है)।

ऐरावत क्षेत्र

सारा कथन – भरत के जैसे, केवल नदियों का तथा विजयार्द्ध के कूटों का नाम अलग विस्तार – 526 6/19 यो०।

↑ ऐरावत क्षेत्र ↓

शिखरीपर्वत – सर्व कथन हिमवान पर्वत के ज्यों, केवल नदी का नाम अलग कुंड का नाम अलग अलग। कूट नाम अलग अलग।

हैरण्यवत क्षेत्र – सर्व कथन हैमवत क्षेत्र के जैसे जघन्य भोग भूमि, नाभि गिरि का नाम अलग अलग। नदी का नाम अलग अलग।

रुक्मि पर्वत – सर्व कथन महा हिमवान के जैसे केवल नदियों का, कुंड का नाम अलग। कूट का नाम अलग।

रम्यक क्षेत्र – मध्यम भोग भूमि सर्व कथन हरि क्षेत्र वत, पर नदियों का नाभिगिरि का नाम अलग।

नील पर्वत – वैडूर्यवत नीला रंग, 9 कूट 16842 2/19 यो०।

विदेह क्षेत्र का सर्व कथन नीचे हैं विस्तार — 33684 4/19 यो०।

निषध पर्वत – रंग–तपाया हुआ सोना, 9 कूट विस्तार – 16842 2/19, एक अकृत्रिम चैत्यालय।

हरिवर्ष – मध्यम भोगभूमि, सुषमा काल, 8421 1/19 यो० विस्तार। बीचों बीच नाभि गिरि, चांदी रंग का विजयवान नाम, गोलाकार 1000 यो० उपर नीचे सर्वत्र ऊँचाई में, विस्तार भी 1000 यो० आहार – 2 दिन अन्तर से संयम का अभाव।

महा हिमवान – चांदी कां रंग, 8 कूट, विस्तार–4210 10/19 यो० ऊँचाई–200 यो०। इस पर्वत पर भी एक अकृत्रिम चैत्यालय।

हैमवत दूसरा क्षेत्र जम्बूद्वीप का – जघन्य भोग भूमि, सुषमा दु:षमा काल सर्वदा, आयु उत्कृष्ट – 1 पल्य, जघन्य 1 पूर्व कोटी आहार– 1 दिन का अन्तराल, आँवला के बराबर, संयम का अभाव अवगाहना ऊ० – 2000 धनुष ज. – 500 धनुष / विस्तार – 2105 5/19 यो० बीचों बीच नाभि–गिरि, चाँदी रंग, गोलाकार।

हिमवान पर्वत – सोने का रंग, ऊ० 100 यो० कूट 11, एक पर सिद्धायतन, बाकी पर तत् नाम सम्बन्धी देव देवी, विस्तार 1052 12/19 यो०।

भरत क्षेत्र को विजयार्द्ध पर्वत – दो भाग (बराबर) में बाँटता है तत्पश्चात् 2 नदी गंगा सिन्धु उनका 3–3 अर्थात छ:भाग करती है। जिसमें लवण सागर के ओर बीच का हिस्सा आर्य खंड है जहाँ छ:काल परिवर्तन है। 5 म्लेच्छ खंड है जहाँ हमेशा चौथा काल रहता है।

विजयार्द्ध पर्वत – चाँदी रंग, 9 कूट, 1 कूट पर सिद्धायतन बाकी पर उस उस नाम वाले व्यंतर देव देवी तथा भवनवासी देव। ऊ० – 25 यो०, विस्तार – 50 यो० नींव ऊ० से चौथाई अर्थात 25/4 = 6 1/4 यो०। इस पर दक्षिण श्रेणी में 55 नगर तथा उत्तरी श्रेणी में 60 नगर है। ये विद्याधर के नगरियां है इन में विद्याधर रहते हैं चौथा काल है विद्याधर तीन विद्याओ से युक्त तथा पूजा उपासना षट कर्मों से युक्त होते हैं। ये सुमेरु पर्वत तक जा सकते हैं। सब विद्याओं को छोड़कर संयम को धारण कर विद्याधर मोक्ष भी जा सकते हैं।

भरत क्षेत्र 526 6/19 यो० विस्तार

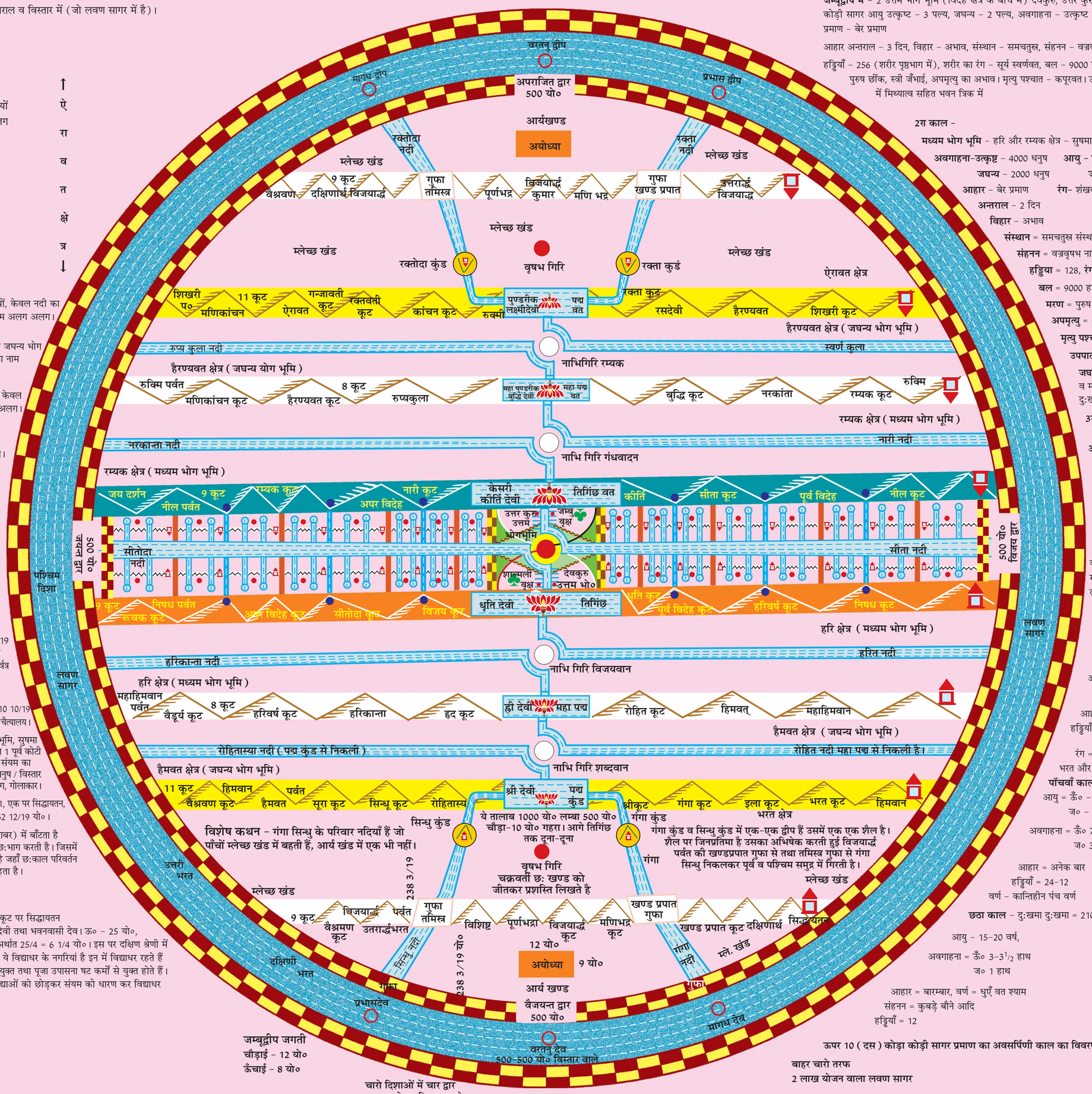

जम्बूद्वीप में – अकृत्रिम चैत्यालय 78 = 6 कुलाचल + 34 विजयार्द्ध + 16 वक्षारगिरि + 16 सुमेरु + 4 गजदन्त + 2 वृक्ष जम्बू शाल्मलि पर है।

भरत ऐरावत के आर्यखण्ड में ६ काल परिवर्तन

जम्बूद्वीप में – 2 उत्तम भोग भूमि (विदेह क्षेत्र के बीच में) देवकुरु, उत्तर कुरु, पहला काल सुषमा सुषमा काल 4 कोड़ा कोड़ी सागर आयु उत्कृष्ट – 3 पल्य, जघन्य – 2 पल्य, अवगाहना – उत्कृष्ट 6000 धनुष, जघन्य – 4000 धनुष, आहार प्रमाण – बेर प्रमाण

आहार अन्तराल – 3 दिन, विहार – अभाव, संस्थान – समचतुस्र, संहनन – वज्रवृषभ नाराच

हड्डियाँ – 256 (शरीर पृष्ठभाग में), शरीर का रंग – सूर्य स्वर्णवत, बल – 9000 हाथियों का। संयम – अभाव। मरण समय पुरुष छींक, स्त्री जँभाई, अपमृत्यु का अभाव। मृत्यु पश्चात – कपूरवत। उपपाद – सम्यक्त्व सहित सौधर्म ऐशान में मिथ्यात्व सहित भवन त्रिक में

2रा काल –

मध्यम भोग भूमि – हरि और रम्यक क्षेत्र – सुषमा काल। काल प्रमाण – 3 कोड़ा कोड़ी सागर

अवगाहना–उत्कृष्ट – 4000 धनुष **आयु – उत्कृष्ट** 2 पल्य
जघन्य – 2000 धनुष **जघन्य** 1 पल्य
आहार – बेर प्रमाण **रंग**– शंखवत, चन्द्रवत
अन्तराल – 2 दिन
विहार – अभाव
संस्थान = समचतुस्र संस्थान
संहनन = वज्रवृषभ नाराज
हड्डिया = 128, **रंग** = शंखवत, चन्द्रवत
बल = 9000 हाथियोंवत / संयम = अभाव
मरण = पुरुष – छींक से, स्त्री – जँभाई से
अपमृत्यु = अभाव
मृत्यु पश्चात = कपूर वत शरीर उड़ जाता हैं।
उपपाद – उत्तम भूमि वत

जघन्य भोग भूमि – हैमवत व हैरण्यवत तथा अन्तद्वीप व मानुषोत्तर से स्वयंभू रमण पर्वत तक। सुषमा दु:खमा – काल

3रा काल, प्रमाण – 2 कोड़ा कोड़ी सागर, आयु – उत्कृष्ट – 1 पल्य जघन्य = 1 पूर्व कोटी
अवगाहना ऊँ० – 2000 धनुष ज = 500 धनुष
आहार प्रमाण – आँवला प्रमाण
अन्तराल = एकदिन। विहार, संयम, बल मरण समय अपमृत्यु, उपपाद, मृत्यु पश्चात शरीर, सहंनन, संस्थान सब भोग भूमि के एक समान।

हड्डियां = 64, रंग – नीलकमल हरित श्याम

चौथा काल — दु:खमा–सुषमा।
कर्मभूमि – सभी विदेहों में, भरत–ऐरावत के म्लेच्छ खंड, विजयार्द्ध पर्वत पर विद्याधर की श्रेणियों में तथा स्वयंभू रमण पर्वत से आगे

काल – 1 कोड़ा कोड़ी सागर प्रमाण में (42 हजार वर्ष कम)
आयु – ऊँ० – 1 पूर्व कोटी
ज० – 120 वर्ष

अवगाहना ऊँ० – 500 धनुष
ज० – 7 सात हाथ

आहार – प्रतिदिन
हड्डियाँ = 48–24

रंग = पांचो
भरत और ऐरावत में – छहों काल परिवर्तन

पाँचवाँ काल = दु:खमा – 21000 वर्ष का
आयु = ऊँ० – 120 वर्ष
ज० – 20 वर्ष

अवगाहना = ऊँ० 7 हाथ
ज० 3–3$^1/_2$ हाथ

आहार = अनेक बार
हड्डियाँ = 24–12
वर्ण – कान्तिहीन पंच वर्ण

छठा काल – दु:खमा दु:खमा = 21000 वर्ष

आयु – 15–20 वर्ष,
अवगाहना = ऊँ० 3–3$^1/_2$ हाथ
ज० 1 हाथ

आहार = बारम्बार, वर्ण = धुएँ वत श्याम
संहनन = कुबड़े बौने आदि
हड्डियाँ = 12

ऊपर 10 (दस) कोड़ा कोड़ी सागर प्रमाण का अवसर्पिणी काल का विवरण है।

जम्बू द्वीप का पुरा विस्तार से कथन :— उन सब असंख्यात द्वीप समुद्र के बीच में गोल (थाली के आकार का) 1,00,000 योजन विष्कम्भ वाला जम्बूद्वीप है। जिसके मध्य में नाभि के समान ***मेरू पर्वत*** (●) विदेह क्षेत्र के बहु मध्य भाग में यह पर्वत तीर्थंकरों के जन्माभिषेक का आसन रूप माना जाता है। यह तीनों लोकों का मापदण्ड है। ये गोलाकार, पृथिवी तल पर 10000 योजन विस्तार तथा 100040 योजन उत्सेध (ऊँचाई) वाला है तथा 1000 यो० नीव है। इस द्वीप में ***भरत वर्ष, हैमवत वर्ष, हरि वर्ष*** विदेह वर्ष, रम्यक वर्ष, हैरण्यवत वर्ष तथा ऐरावत वर्ष हैं। उन क्षेत्रों को विभाजित करने वाले और पूर्व से पश्चिम लम्बें ऐसे हिमवान, महा हिमवान, निषध, नील, रूक्मि और शिखरी ये छ: कुलाचल हैं। ये छहों क्रम से सोना, चाँदी, तपाया हुआ सोना, वैडूर्यमणि, चाँदी और सोना इनके समान रंग वाले हैं। इनके पार्श्व भाग मणियों से चित्र विचित्र हैं तथा ये मूल, मध्य तथा ऊपर समान विस्तार वाले हैं। इनपर क्रम से पद्म, महा पद्म, तिगिंछ केसरी, महापुण्डरीक और पुण्डरीक ये तलाब हैं। पहले ह्रद के मध्य में 1 योजन का एक कमल है इसके चारों तरफ और भी कमल है। — आगे ह्रद में इससे दूने विस्तार वाले कमल हैं। कमलकी संख्या सभी ह्रद में बराबर है। एक ह्रद में – 140116 कमल है।

(1) ***भरत क्षेत्र का विस्तार 526 6/19 यो०,*** इससे दूना हिमवान पर्वत, इससे दूना हैमवत क्षेत्र, इससे दूना महा हिमवान, इससे दूना हरि क्षेत्र इससे दूना निषध पर्वत, इससे दूना विदेह क्षेत्र, अबपुन: विदेह से आधा नील पर्वत सारी रचना दक्षिण के समान।

(2) ***पहला ह्रद*** हिमवान पर पद्मकुंड जो 1000 यो० लम्बा 500 यो० चौडा 10 यो० गहरा, बाद के सभी तालाब तिगिंछ तक दूने फिर केसरी में तिगिंछ के बराबर फिर पुन: आधे–आधे विस्तार वाले।

(3) पहले तालाब से पद्म से तीन मुख्य नदियो गंगा सिन्धु रोहितास्या तथा पुण्डरीक कुण्ड से भी तीन सुवर्णकूला, रक्ता, रक्तोदा वाकी 4 तालाब से 2–2 इस प्रकार 14 नदियो सात क्षेत्रों में बहती है।

(4) जम्बूद्वीप में — 4 नाभि गिरि चार भोगभूमि में है। हैमवत (ज. भोगभूमि में शब्दवान) हरि (म. भोगभूमि में विजयवान)
रम्यक (म. भोग भूमि में गंधवादन), हैरण्यवत (ज. भोगभूमि में रम्यक)। ये चाँदी के रंग के है। गोलाकार है। 1000 यो० विस्तार तथा 1000 यो० ऊचाँई वाले ऊपर नीचे सर्वत्र समान है।

(5) भरत क्षेत्र के बीचों बीच विजयार्द्ध पर्वत है। दो भाग में बाटँता है। गंगा सिन्धु से छ: भाग हो जाते है। बीच का हिस्सा लवणसागर के तरफ वाला आर्य खण्ड है इसके वीच में ■ अयोध्या नगरी है। ठीक ऊपर वाले म्लेच्छ खण्ड में वृषभ गिरि है। जिसपर चक्रवर्ती प्रशस्ति लिखते है छहों खण्डों को जीतकर। 5 म्लेच्छ खंड है। वृषभ गिरि स्वर्ण रंग का है। 16 ह्रद हैं, एकएक कुलाचल पर कुल छ: तथा 5–5 सीता सीतोदा नदी के तट पर दूसरी मान्यता से 10–10 है (5–5 पूर्व दिशा में सीता नदी के तट पर), 5–5 पश्चिम दिशा में सीतोदा नदी के तट पर। अर्थात 26।

(6) 2 मागध द्वीप लवण सागर में जम्बूद्वीप की जगति से हटकर गंगा नदी के तथा रक्तोदा नदी के सम्मुख, 2 प्रभास द्वीप सिन्धु नदी तथा रक्ता नदी के सम्मुख, 2 वरतनु द्वीप वैजयन्त व अपराजीत द्वार के सम्मुख ये सारे द्वीप लवण समुद्र में संख्यात योजन भीतर जाकर हैं।

(7) चारो दिशाओं में चार द्वार जम्बू द्वीप जगति में पूर्व में विजय द्वार, दक्षिण में वैजयन्त पश्चिम में जयन्त तथा उत्तर में अपराजीत नामवाले द्वार इनका विस्तार तिल्लोचपण्णति में 500 योजन तथा 4 योजन दोनों बतायें हैं।

विदेह क्षेत्र (हमेशा चौथाकाल दु:खमा सुखमा, शाश्वत कर्मभूमि, निरंतर मोक्ष जाते हैं) विद्यमान 20 तीर्थंकर में 4 जम्बूद्वीप में है। जम्बूद्वीप के ठीक बीचों बीच निषध व नील पर्वत से घिरा हुआ विदेह क्षेत्र है। इसका विस्तार निषध व नील पर्वत से दूना है — 33684 4/19 यो०। इसके बीचों बीच सुमेरू पर्वत है तथा 4 गजदन्त पर्वत है जिसमें ***चाँदी रंग वाला सौमनस*** (पूर्व दक्षिण में) नाम का तथा दूसरा विद्युन्माली (पश्चिम दक्षिण) तपनीयवत रक्त एक तरफ निषध को तथा दूसरी और सुमेरू को छूते है इनपर क्रम से सात और नौ कूट है एक एक अकृत्तिम चैत्यालय है बाकि पर तत् नामधारी देव हैं। तीसरा गन्धवादन पश्चिमोत्तर में पीला रंग का 7 कूट तथा चौथा माल्यवान नील वर्ण का इसपर नौ कूट ये दोनो एक तरफ सुमेरु दूसरी तरफ नील पर्वत को छुते हैं। विदेह क्षेत्र सीता नदी जो केसरीकुंड से निकली है पूर्व दिशा की ओर बहती हुई पूर्वी विदेह के दो बरावर भागों में बाँटती है। तथा सीतोदा नदी तिगिंछ कुंड से निकल पश्चिमी विदेह को 2 बराबर भाग में बाँटती हैं। इस प्रकार चार विदेह क्षेत्र हो जाते हैं एक

नोट : ● **विदेह क्षेत्र में सुमेरु पर्वत गजदन्त आदि का विवरण दूसरे नक्शे में देखें** ● **विदेह क्षेत्र भी अन्य नक्शे से समझे**

महा विदेह के। गजदन्त को छूती हुई वन वेदी होती है। गजदन्त से घीरे हुए क्षेत्र को उत्तम भोग भूमि देवकुरू (दक्षिण पूर्वी) पश्चिमी दक्षिण के तरफ शाल्मली वृक्ष ♣ अनादि निधन पृथिवी काय, इसपर एक अकृत्रिम चैत्यालय, शाखाओं पर वेणुधारी, अनावृत, अनावृत देवों के भवन, तथा पूर्वी उत्तरी भाग में जम्बूवृक्ष ♣ जिसके कारण इस द्वीप का जम्बूद्वीप पड़ा, शाल्मली वृक्ष के तरह ही। ■ सुमेरू के चारो ओर भद्रशाल वन, ■ वन वेदी के पासवाले देवारण्य वन। सीता सीतोदा के उदगम् स्थान पर दोनों तरफ ■ 5–5 द्रह है। इन द्रहों के (20) के किनारे 10–10 कांचन शैल 200 किसी मान्यता के अनुसार 5–5 100 है। ● – 4 यमक गिरि है। जो दोनों कुरूओं के सीता सीतोदा दोनो तटों पर। 8 दिग्गजेन्द्र विदेह क्षेत्र के भद्रशाल वन में व दोनो कुरूओं में सीता सीतोदा के दोनो तटों पर। प्रत्येक एक विदेह में — पहले वन वेदी फिर वक्षार गिरि फिर विभंगा कुंड फिर वक्षार फिर विभंगा फिर वक्षार फिर विभंगा फिर वनवेदी इस प्रकार 8 क्षेत्र बन जाते हैं यानि 32 क्षेत्र चारों दिशाओ के। एक एक क्षेत्र में बीचों बीच विजयार्द्ध है 32 विजयार्द्ध। उत्तरी पूर्वी व पश्चिमी में गंगा सिन्धु निकलती है। दक्षिणि पूर्वी व पश्चिम मे रक्ता रक्तोदा निकलती है जो प्रत्येक क्षेत्र को छ: भाग मे बाँटती है। प्रत्येक में एक (नदी के तट पर) आर्य खण्ड 5 म्लेच्छ खण्ड। एक–एक वृषभ गिरि जिसपर उस क्षेत्र का चक्रवर्ती अपनी प्रशस्ति लिखता है, आर्य खंड के ठीक उपर वाले म्लेच्छ खंड के बीच में बृषभ गिरि।

इस प्रकार एक–एक विदेह में – 8 नगर (आर्यखण्ड), 40 म्लेच्छ खंड, 4 वक्षार गिरि, 3 विभंगा नदी, 3 विभंगा कुंड (जिससे विभंगा नदी) निकलती है। ये विंभगा कुन्ड कुलाचल पर है। 8 विजयार्द्ध, 8–8 गंगा सिन्धु कुंड या रक्ता रक्तोदा कुंड ये कुलाचल के तल भाग में हैं जिनसे गंगा सिन्धु, रक्ता रक्तोदा नदी निकलती है। प्रत्येक भाग को छ: भाग में बांटती है। प्रत्येक क्षेत्र सम्बन्धी 8–8–8 मागध, प्रभास वरतनु देव जिनके द्वीप सीता सीतोदा नदी में है 12 अकृत्रिम चैत्यालय – 8 विजयार्द्ध पर 8, 4 वक्षार गिरि पर 4।

पुरे विदेह की रचना – 4 विदेह इसमें 32 क्षेत्र, 8 वन वेदी, 32 आर्यखण्ड, 160 म्लेच्छ खण्ड, ● 32 वृषभ गिरि, 32 विजयार्द्ध पर्वत, 16 वक्षार गिरि, ● 12 विभंगा नदी, 16–16 गंगा सिन्धु नदी 16–16 रक्ता रक्तोदा नदी, 32–32 मागध वरतनु प्रभास देव के तीर्थस्थान सीता सीतोदा नदी में, 48 अकृत्रिम चैत्यालय, ● 12 विभंगा कुंड, 16–16 गंगा सिन्धु कुंड, 16–16 रक्ता रक्तोदा कुंड। **वक्षार गिरि** स्वर्ण रंग, 4–4 कूट एक पर सिद्धायतन बाकी पर व्यन्तर देव। विजयार्द्ध में 50 यो० लम्बी, 8 यो० उँची तथा 12 यो० विस्तार वाली दो गुफा खण्ड प्रपात तमिस्र गुफा।
विजयार्द्ध – श्वेत वर्ण – 9–9 कूट एक पर सिद्धायतन बाकी पर व्यन्तर देव। विजयार्द्ध में 50 यो० लम्बी, 8 यो० उँची तथा 12 यो० विस्तार वाली दो गुफा खण्ड प्रपात तमिस्र गुफा।
● **सुमेरु** 100000 यो० वाला ऊँचाई, उसके ऊपर 40 यो० की चूलिका। पर्वत पर चार वन (भद्रशाल, नंदन, सौमनस और पांडुक) सबमें चार–चार अकृत्रिम चैत्यालय। इस पर चार शिलायें जिस पर **जिन बालक** का अभिषेक होता है। प्रत्येक अकृत्रिम चैत्यालय में 108, 108 जिन अकृत्रिम प्रतिमा है।

विद्यमान तीर्थंकर – अधिक से अधिक विद्यमान तीर्थंकर 160 हो सकते हैं। एक–एक महा विदेह में 4 विदेह अर्थात 5 महा विदेह हैं (1 जम्बू द्वीप में, 2 धातकी खंड में, 2 पुष्कार्द्ध द्वीप में) तो 20 विदेह हो गये। एक विदेह के 8 क्षेत्र में 8 आर्यखण्ड, उनमें प्रत्येक में एक–एक तीर्थंकर। एक विदेह के 8 आर्यखण्ड तो 20 विदेह के 160 आर्यखण्ड, सबमें अगर हों तो 160 तीर्थंकर विद्यमान रह सकते हैं। ऐसा वर्णन मिलता है कि अजीन नाथ जी तीर्थंकर के काल 5 में भरत एवं 5 ऐरावत के आर्यखण्ड में तथा 160 विदेहों में कुल मिलाकर 170 तीर्थंकर एक साथ विद्यमान थे।

कम से कम 20 तीर्थंकर विद्यमान रहते ही हैं 5 महा विदेहों में। अर्थात एक–एक विदेह में एक–एक। एक मेरु सम्बन्धि 4 तीर्थंकर विद्यमान रहते ही हैं।

जम्बू द्वीप सम्बन्धि विदेह क्षेत्र के तीर्थंकर कहाँ ?

प्रथम सिमन्धर स्वामी का समवशरण – पूर्वी उत्तरी विदेह में सीता नदी के उत्तरी तट (सुमेरु से 8वां क्षेत्र) स्थित पुष्कलावती क्षेत्र के पुण्डरीकिणी नगर में स्थित है।

दूसरे युगमन्धर स्वामी का समवशरण – पूर्वी दक्षिणी विदेह में सीता नदी को दक्षिणी तट पर स्थित (जम्बूद्वीप की जगति से प्रथम क्षेत्र) वत्सा क्षेत्र की सुसीमा नगरी में स्थित है।

तीसरे बाहु स्वामी का समवशरण – दक्षिणी पश्चिमी विदेह में सीतोदा नदी के तट पर स्थित सरित क्षेत्र की (सुमेरु से 8वां क्षेत्र) वीतशोका नगरी में स्थित है।

चौथे सुबाहु स्वामी का समवशरण – उत्तरी पश्चिमी विदेह में सीतोदा नदी के उत्तरी तट पर स्थित (जम्बूद्वीप जगति से प्रथम) क्षेत्र वप्रा के विजया नगरी में विद्यमान है।

प्रिन्टिंग की भूल अथवा ज्ञान के क्षयोपशम की कमी से जो कुछ भूल हो विद्वत जन उसे सुधार कर पढ़े –

क्षमा प्रार्थी **ललिता जैन–शंभु लाल जैन,** (चौरंगी दिगम्बर जैन मन्दिर, कोलकाता)
ओम नेत्र अपार्टमेंट, तीन तल्ला, 48 पेरी मोहन राय रोड, चेतला, कोलकाता–27, होआटसऐप +91 9830963621, मो० +91 9674337147
चित्रांकित करने में सहयोगी : **संजय–श्वेता जैन, शरद–पूजा जैन** एवं **ड० विश्वनाथ–मधु दुदानी**

आर्ट प्रिंटिंग हाउस, 43ए, अब्दुल हालीम लेन, कोलकाता 700 016 द्वारा मुद्रित।